दिनांक 18.06.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

विश्व कल्याण करके नई दुनिया को रचने वाला

हमें पूछ रहा सर्वशक्तियों से सन्तुष्ट करने वाला

क्या खुद को लाइट हाउस माइट हाउस बनाया

क्या तुमने सदा काल के लिए रूप ये अपनाया

अगर खुद को तुम लाइट स्वरूप नहीं बनाओगे

अन्य आत्माओं को कभी लाइट नहीं दे पाओगे

सर्व शक्तियों का स्वामी बन सूर्यवंशी कहलाओ

इच्छा अनुसार हर आत्मा को शक्ति देते जाओ

औरों को सन्तुष्ट करके सन्तुष्ट मणी कहलाओ

बापदादा के मस्तक मणी बच्चों तुम बन जाओ

हर विषय में बच्चों तुम खुद को जांचते जाओ

ज्ञानयुक्त बनकर स्वदर्शन चक्रधारी कहलाओ

याद की यात्रा बच्चों तुम निरन्तर करते जाओ

योगयुक्त बनकर पावरफुल का टाइटल पाओ

अपने जीवन को दिव्य गुणों से सम्पन्न बनाओ

चारों ओर दिव्य गुणों की खुशबू फैलाते जाओ

स्व चेकिंग को बच्चों व्यक्तिगत संस्कार बनाओ

आलस और अलबेलेपन का अंश वंश मिटाओ

स्व परिवर्तन के लिए खुद के चेकर बन जाओ

इसी विधि से नई दुनिया के निर्माता कहलाओ